PART-**1**

अरब भूगोलवेत्ता- अल-बरूनी का भूगोल के क्षेत्र में योगदान

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

अरब भूगोलवेत्ता (Arab Geographers in hindi)

अनेक अरब लेखकों और विद्वानों ने भूगोल के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनमें से कुछ प्रमुख विद्वानों के योगदान की संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

अल-बरूनी (Al-Beruni) का भूगोल के क्षेत्र में योगदान

(i) खगोल विज्ञान में योगदान- अल-बरूनी ने टालमी की पुस्तक 'अलमाजेस्ट' के अनुरूप खगोल विज्ञान की पुस्तक 'कानून-अल-मसूदी' लिखा था जिसमें महत्वपूर्ण खगोलीय सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। इस पुस्तक में सूर्य और चन्द्रमा का विस्तृत वर्णन किया गया है। अल-बरूनी ने पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच की अधिकतम और न्यूनतम दूरियों को भी नापा था। उन्होंने यह भी बताया था कि ज्वार की अधिकतम और न्यूनतम ऊँचाई चन्द्रमा की अवस्थाओं (कलाओं) में अंतर का परिणाम होती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अल-बरूनी खगोल विद्या के प्रति समर्पित थे ।

(ii) गणित में योगदान- अल-बरूनी एक महान गणितज्ञ थे। ज्यामिति और अंकगणित पर उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त था। वे बीजगणित के भी विशेषज्ञ माने जाते थे। अल-बरूनी ने गोलीय त्रिकोणमिति के साथ-साथ भारतीय अंकगणित के सिद्धान्तों को भी अपनाया था।

(iii) भौतिक भूगोल में योगदान- भूआकृति विज्ञान और जीवाश्म विज्ञान (Paleontology) में अल-बरूनी ने महत्वपूर्ण कार्य किया था। उन्होंने नदियों के बाढ़ क्षेत्रों तथा जल स्रोतों (springs) की विवेचना की थी।

(iv) प्रादेशिक भूगोल में योगदान- अल-बरूनी ने एशिया, अफ्रीका और यूरोप के बहुत से देशों की प्रादेशिक विशेषताओं का वर्णन किया है।

(v) औषध विज्ञान- अल-बरूनी ने औषधियों के निर्माण से संबन्धित औषध विज्ञान (Medicine science) पर भी पुस्तक लिखी थी इसमें वनस्पतियों, पशुओं, खनिजों आदि से द्वाएं बनाने और उनसे रोगों के उपचार की विधियों का वर्णन किया गया है।

उपर्युक्त विवरणों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अल-बरूनी खगोल विज्ञान, दर्शन, भुगोल, भूगर्भशाख्त्र, गणित, भू-आकृति विज्ञान, औषद विज्ञान तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे। अपनी यात्राओं, पूर्ववर्ती यूनान, रोमन, भारतीय विद्वानों की पुस्तकों के अध्ययन, खुले मस्तिष्क और कठोर परिश्रम तथा विशिष्ट लेखन द्वारा अल-बरूपी मध्यकाल के महत्वपूर्ण भूगोलवेत्ता बन गये थे।